महिला साहित्यकारों में महादेवी वर्मा का स्थान

इन्दु कुमारी
+2 उच्च विद्यालय बसकुपी, देवघर, झारखण्ड
(पूर्व व्याख्याता, जामताड़ा महिला महाविद्यालय)
E-mail: indubaskuppi@gmail.com

शब्द संक्षेप – *महिला साहित्यकारों में महादेवी वर्मा का स्थन हिन्दी साहित्य में अमूल्य है। हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा ने अपनी कविता, गंथ, संस्मरण, कहानी व निबंधों के माध्यम से अमिट छाप छोड़ी ळें*

विषय संकेत *: महिला साहित्यकार, महादेवी, काव्य और गद्य, नारी चिंतन*

महिला साहित्यकारों में महादेवी वर्मा का स्थान

भूमिका

छायावादी प्रकृति, तरल सरल सौंदर्य का प्रेम विरह और वेदना का स्वर संधान कर, उस विरह वेदना की रहस्यमयी आध्यात्म चेतना की अंतरंग अनुभूतियों से सजा–संवार कर अपने काव्यमय स्वरों में जिसने महनीय, काम्य एवं ग्राह्य बना दिया, उस महान विभूति का नाम है महादेवी वर्मा । इनका साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी है; क्योंकि यह काव्य, रेखाचित्र, निबंध और आलोचना साहित्य से निर्मित महादेवी हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं । वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार स्तम्भों में से एक मानी जाती है। (1) आधुनिक मीरा के नाम से भी वे प्रख्यात है। (2) निराला जी ने उन्हें हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती कहा है। (3)

प्रमुख रचनाएँ

पद्यकाव्य (कविता संग्रह)

1. नीहार (1950)
2. रश्मि (1932)
3. नीरजा (1934)
4. संध्यगीत (1936)
5. दीपशिखा (1992)
6. सप्तपर्णा (अनुदित 1959)
7. प्रथम आयाम (1974)
8. अग्निरेखा (1990)

गद्य साहित्य

रेखा चित्र – अतीत के चलचित्र (1941) और स्मृति की रेखाएँ (1943)

संस्मरण : पथ के साथी (1956) और मेरा परिवार (1972) और संस्मरण (1983)

निबंध : श्रृंखला की कड़ियाँ (1942)

विवेचनात्मक गद्य (1942)

साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962)

संकल्पिता (1969)

ललित निबंध : क्षणदा (1956)

कहानियाँ : गिल्लू

संस्मरण रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह : हिमालय

महादेवी का हिन्दी साहित्य में स्थान

महादेवी वर्मा की हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदान है। वे खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दाबली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्रजभाषा से ही संभव माना जाता था । न केवल काव्य बल्कि समाज सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना की दृष्टि से

प्रभावित रहे । उन्होंने मन की पीड़ को इतने स्नेह और श्रृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन–जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया । (4) शचीरानी गुई ने उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है। (5)

महादेवी कि काव्य में छायावादी प्रवृत्तियाँ :–

महादेवी न केवल छायावादी कवयित्री है, अपितु वे उसकी प्रौढ़ चिन्तक और व्याख्याकार भी है। महादेवी के काव्य की सबसे प्रमुख विशेषता है कि वह आरम्भ से लेकर अन्त तक एक ही लक्ष्य को लेकर चला है। वे निरन्तर अकेली ही अपनी साधना के दीप जलाए हुए लक्ष्य की और अविचलित भाव से अग्रसर रहीं –

पंच होने दो अपरिचित
प्राण रहने दो अकेला ।
और होंगे चरण हारे;
अन्य हैं जो लौटाने दे शूल को संकल्प सारे ।

जीवन दर्शन और दार्शनिक मान्यताएँ :–

महादेवी के व्यक्तिगत, जीवन दर्शन एवं काव्य पर बौद्ध–दर्शन एवं अद्वैत दर्शन दोनों का गहरा प्रभाव है। इसकी पुष्टि महादेवी की स्वीकृतियाँ करती है। ''मेरे सम्पूर्ण जीवन–विकास में उस बुद्ध–प्रसूत चिंतन का भी विशेष महत्व है, जो जीवन को बाह्य व्यवस्थाओं में गति पाया है। वे निर्गुन–ब्रह्म की आराधिका हैं, परन्तु उनका निर्गुण ब्रह्म सगुन साकार के समस्त गुणों से विभूषित हैं :–

करूणामय को भाता है,
तम के परदों में आना । (6)

महादेवी ने सगुण निराकार ब्रह्म को जो कि सृष्टिकर्त्ता भी है, पति रूप में स्वीकार किया है और अपनी पहली ही काव्य–कृति 'नीहार' में प्रिया–प्रियतम के सम्बन्ध की स्थापना पर प्रकाश डाला है। व बाहर और भीतर – बाह्य जगत और अर्न्तजगत में एक ही आराध्य का दिव्य आभास ही व्याप्त मानती है :–

घूंघट पट से झाँक सुनाते
ऊषा के आरक्त कपोल ।
जिसकी चाह तुम्हें है उसने
छिड़की मुझ पर लाली घोल । (7)

महादेवी के गद्य में कविता का मर्म :–

जिस दौर में महादेवी वर्मा की कविताएँ रची गई वह दौर भारतीय जनमानस में द्वन्द का युग रहा है। चोथे आदर्शों को नारी जीवन पर थोपा जाना उस समय का सांस्कृतिक था । इस सच्चाई को महादेवी ने बड़ी गंभीरता से समझा और 'यामी' जैसे पात्र द्वारा नारी जाति की इस त्रासदी को अभिव्यक्त भी किया । ऐसे समय में महादेवी वर्मा जैसे पढ़ी–लिखी महिला, जो एक कवि भी है और एकाकी भी है, जिसने अपने वैवाहिक स्थर का सामाजिक तौर पर खुलासा नहीं ह। व प्रेम कविता लिखे तो समय के मध्यकालीन संस्सकार कैसे सहन करते ? महादेवी वर्मा ने इस सच्चाई को जल्द ही स्वीकार कर लिया और उनकी कविता ने अभिव्यक्ति को अक्षुन्न रखने लिए एक समाज स्वीकृत पद्धति अंगीकार कर ली वह थी परलोक और रहस्य की पद्धति ।

वे लिखती है –

कौन तुम मेरे हृदय में ?
कौन मेरी कसक में नित
मधुरता भरता अलछित
कौन प्यासे सोचनों में । (8)

महादेवी ने प्रकृति को विराट का सहोदर मानकर उसे अपनी बेदनानुभति का माध्यम बनाया है और लौकिक प्रतीकों के माध्यम से अलौकिक तत्वों का स्पष्टीकरण भी किया ळें

उन्होंने अपने काव्य में अध्यात्म तत्व को को प्रमुख स्थान दिया है । अतः उनकी कविता की स्वभावितकता ही एक सुनिश्चित पृष्ठभूमि है जो उनकी काव्य रचनाओं को सम्यक अनुशीलन करने पर सहज ही स्पष्ट हो जाती है। सृष्टि के अभेद के साथ आत्मा–परमात्मा के समान गुणों की ओर एकाकार चर्चा अनेक प्रकार से उन्होंने की –

सिन्धु को क्या परिचय दें देव ।
बिगढ़ते बनते बीचि–विलास ।
क्षुद्र हैं मेरे बुद्बबुद प्राण ।
तुम्हीं में सृष्टि तुम्ही में नाश (9)

ISBN-978-93-85822-52-0

गद्य काव्य में
महादेवी का नारी चिंतन दृष्टिकोण :–

महादेवी वर्मा का नारी चिंतन समाज केंद्रित है, फलतः तटस्य और निष्पक्ष है। वे नारी जीवन की विडम्बनाओं के लिए पुरूषों को ही दोषी नहीं ठहरातीं, बल्कि महिलाओं को भी समान रूप से उत्तरदायी ठहराती है। भारतीय नारी की अदृष्ट विडम्बना को उजागर रते हुए उन्होंने लिखा कि एक ओर तो वे देवी के प्रतिष्ठापूर्ण पद पर शोभित है तो दुसरी और परवश भी । उनका कहना है, ''वह पवित्र देव मन्दिर की अधिष्ठात्री देवी भी चुकी है और अपने गृह के मतिन कोने की बन्दिनी भी'' (9) महादेवी जी का नारी चिंतन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उस समय का है जब भारतीय नारी का 90% हिस्सा निरक्षर था तथा सामाजिक चेतना नहीं के बराबर थी । महादेवी वर्मा ने 1935 में चाँद पत्रिका के विदुषी अंक का संपादन किया था । पत्रिका के सम्पादकीय में आधुनिक महिला जगत की स्थिति पर उनकी टिप्पनी थी ''अवश्य ही आज की नारी प्राचीन नारी जगत् की वंशज नहीं जान पड़ती, इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि वह स्वंय अपनी शक्ति और दुर्बसता दोनों से अनभिज्ञ है। (10) विश्वंभर मानव के अनुसार ''भारतीय नारी के मुख्य दोष मजादेवी जी ने यह बताया है कि उसमें व्यक्तित्व का अभाव है। उसे न अपने स्थान का ज्ञान है, न अपने कर्त्तव्य का । जो लोग उसकी सहायता करना चाहते हैं, वह उन्हीं का विरोध करती है। (11) महादेवी ने नारी को केन्द्र में रखकर ही समस्याओं पर दृष्टिपात किया है। इन निबंधो में उनका भारतीय नारी के प्रति सहानुभूति से भरा हुआ मन उन सामाजिक तत्वों के प्रति क्षुब्ध है जो नारी के लिए श्रृंखला की कड़ियाँ बन गए है। महादेवी श्रृंखला की कड़ियों को काट फेंकने के लिए नारी को उद्‌बुद्ध करना चाहती हैं, किंतु वे यह भी चाहती हैं कि विद्रोहिणी नारी अपने नारी अपने नारीत्व के मूलभूत आधारों को भी सुरक्षित रखें । (12) महादेवी ने ''श्रृंखला की कड़ियाँ'' पुस्तक में स्त्री समाज की समस्याओं पर विचार के बहाने उन संदर्भों और संकेतों का सामाजिक रूप भी प्रस्तुत किया गया है, जिनसे स्त्री–समाज के अंदर हो रहे परिवर्तन और विकास की प्रक्रियाओं को समझा जा सकता है। देवेन्द्र चौबे के मतानुसार, 'श्रृंखला की कड़ियाँ' मात्र एक पुस्तक नही है बल्कि इसमें स्त्री के सामाजिक इतिहास लेान के से श्रोत मौजूद हैं, जो स्त्री विषयक इतिहास लेखन की दशा और दिशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । (13) महादेवी ने लिखा है – 'कला के पारस का स्पर्श पा लेने वाले का कलाकार के अतिरिक्त कोई नाम नहीं, साधक के अतिरिक्त कोई वर्ग नहीं, सत्य के अतिरिक्त कोई पुँजी नहीं, भाव–सौंदर्य के अतिरिक्त कोई व्यापार नहीं और कल्याण के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं ।' लेखन अवधि में उन्होंने एकनिष्ठ होकर अबाद्य गति से भावमय सृजन और कर्ममय जीवन की साधना में लिखी हुई गत को सार्थक बनाया (14) महादेवी ने गद्य में भी कविता के कर्म की अनुभूति कराई और (गद्यं कविनां निकषं बदन्ति उक्ति को चरितार्थ किया । हिन्दी साहित्य में चंद्रकान्ता मणि के समान द्रवणशील करूण रस की देवी महादेवी वर्मा न केवल विशिष्ट कलाकार, कवयित्री और गद्य लेखिका है अपितु इससे आगे एक श्रेष्ठ निबंधकार भी है। उनका गद्य कविता की भाँती सौंदर्य के भुलावे में डालकर हमें जीवन से दूर नहीं ले जाता, वह तो हमारी शिक्षाओं में चेतना भरकर हमें यथार्थ जीवन में झांकने की प्रेरणा प्रदान करता है। (15)

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः महादेवी हिन्दी साहित्य के महिला साहित्यकारों में अग्रणी हैं । उनके साहित्यकारों में अग्रणी हैं । उनके सहित्य में न केवल काव्य व गीत हमें मुग्ध करते हैं बल्कि उनकी गद्य रचनाएँ भी हमें वर्तमान समाज की स्थिति का आइना दिखाती हैं । इस लघु शौध पत्र में महादेवी के नारी चिंतन का विशेष रूप से दृष्टिपात किया गया है, जिसमें नारी की स्वतंत्रता, मनोभावना का सजीव चित्रण है।

संदर्भ सूची :–

[1] महादेवी वर्मा 1985 – पृ0 38
[2] "Mahadevi Verma : Modern Meera - Literary India.
[3] ''महादेवी का सर्जन : प्रतिरोध और करूण'' एच.टी. एस.एल. तद्भाव – अभिगमन तिथि (2007)
[4] निशा सहगल/''हिन्दी की सरस्वती'' : महादेवी वर्मा'' – सृजनगामा
[5] महादेवी वर्मा : शचीरानी गुई – पृ0 4
[6] यामा : पृ 13, लोकभारती प्रकाशन ।
[7] महादेवी : परिक्रमा – पृ0 25
[8] प्ररिक्रमा : पृ0 19
[9] श्रृंखला की कड़िया : महादेवी वर्मा लोकभारती प्रकाशन – पृ0 32

 ISBN-978-93-85822-52-0

[10] पूर्ववत – पृ 22
[11] हिन्दी साहित्य का सर्वेक्षण सं. विश्वंभर मानव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0–155
[12] हिन्दी का गद्य साहित्य, पं0 रामचन्द्र तिवारी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पुनमुर्दण 1999 पृ0 630
[13] आजकल, मार्च 2007, सं0 प्रवीण उपाध्याय, पृ0 56
[14] वर्मा, महादेवी (1997) : महादेवी : एक दृष्टि में । राधाकृष्ण प्रकाशन ।
[15] गद्यकार महादेवी वर्मा (एच.टी.एम.एल.) – ताजीलोक

 ISBN-978-93-85822-52-0